सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरूषार्थ

पुण्य आत्माएं वे हैं जिनका मन सभी के प्रति शुभभावनाओं से भरा है, जिनके मन में उन आत्माओं के प्रति भी अशुभ भाव नहीं उठते जो उनकी आलोचना करते हैं। पुण्यात्मा बनने में बड़ा सुख है। जो आत्मा दूसरों के प्रति शुभभावना रखती है, उन्हें स्वत: ही सबका सहयोग मिलता है। सभी के प्रति शुभ भावनाएं रखने की लहर फैलाओ।

प्रथम सप्ताह

स्वमान -मैं दिव्य जन्मधारी ब्राह्मण हूँ ।

दिव्य जन्मधारी ब्राह्मण अर्थात सदा आत्मचिन्तन और परमात्म चिन्तन में रहने वाले। सदा परमात्म दिव्य कार्य में मन-वचन और कर्म से सहयोगी बनने वाले। सदा निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी बन सेवा का पार्ट बजाने वाले।

योगाभ्यास -मैं परमात्म ज्ञान द्वारा नवजीवन पाने वाली आत्मा हूँ...मेरा जीवन अलौकिक व ईश्वरीय है....मैं दिव्य गुणों को धारण करने वाला सच्चा ब्राह्मण हूँ... दिव्यगुण ही हमारे जीवन का सच्चा श्रृंगार है...स्वयं परमात्मा हमारे जीवन को दिव्य गुणों से श्रृंगार कर रहे हैं। अब मेरा जीवन दिव्य गुणों से सुसज्जित हो गया है ...मुझे अपने दिव्य गुणों रूपी पुष्पों से सारे जग को सुगन्धित करना है।

पाँच स्वरूपों की रूहानी ड्रिल करें - अनादि में -मैं आत्मा ज्योतिबिन्दु स्वरूप, आदि में -देव स्वरूप, मध्य में -पूज्य स्वरूप, वर्तमान में -ब्राह्मण स्वरूप, भविष्य में -फरिश्ता स्वरूप।

धारणा - दिव्य जन्मधारी के नशे में रह अपने संस्कारों को दिव्य बनाएं। पांच स्वरूपों की हर घंटे में कम से कम पाँच मिनट रूहानी ड्रिल करें। बार-बार याद करें कि मेरे आदि और अनादि संस्कार क्या हैं? और फिर उसे प्रैक्टिकल जीवन में लाने का पुरूषार्थ करें।

चिन्तन - दिव्य जन्मधारी आत्मा का धर्म और क्या है? दिव्य जन्मधारी आत्माओं की क्या-क्या निशानियाँ होंगी?

साधकों के प्रति - आप दिव्य जन्मधारी ब्राह्मण आत्मा हो.. आपका कर्म दिव्य और अलौकिक होना चाहिए। आपका जीवन न केवल स्वयं के प्रति लेकिन विश्व की आत्माओं के लिए होना चाहिए...आपको देखकर लोग कहें कि इनको ऐसा बनाने वाला कौन? आपके जैसा जीवन बनाने की उन्हें प्रेरणा मिले तब कहेंगे दिव्य और अलौकिक जीवन वाली ब्राह्मण आत्मा।

द्वितीय सप्ताह

स्वमान -मैं समर्थ आत्मा हूँ।

नशा रहे -मैं विश्व का नवनिर्माण करने वाली आधारमूर्त आत्मा हूँ...हमारे ही स्व-परिवर्तन के द्वारा विश्व परिवर्तन होता है, इस बेहद ड्रामा के अंदर हम हीरो एक्टर और हीरे तुल्य जीवन वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ -यह नशा समर्थ बना देता है।

योगाभ्यास - मैं मा.सर्वशक्तिवान, सर्वशक्तिवान बाप से कम्बाइण्ड हूँ..। सर्वशक्तिवान बाप से सर्वशक्तियों की किरणें निरन्तर मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं और मैं आत्मा चार्ज हो रही हूँ।

बाबा के महावाक्य -जब तुम इस स्मृति में रहेंगे कि मैं मा.सर्वशक्तिवान, सर्वशक्तिवान से कम्बाइन्ड हूँ तो दुनिया की किसी भी मायावी शक्ति का प्रभाव तुम्हारे उपर पड़ नहीं सकता।

धारणा - अपनी समर्थ स्थिति द्वारा व्यर्थ से पूरी तरह मुक्त रहना। अपनी समर्थ स्थिति बनाने के लिए अथवा व्यर्थ से मुक्त रहने के लिए सदा एक स्लोगन प्रैक्टिकल कर्म में यूज करें .. न व्यर्थ देखेंगे, न व्यर्थ बोलेंगे, न व्यर्थ सुनेंगे, न व्यर्थ सोचेंगे और न ही व्यर्थ कर्म में समय गंवाएंगे।

चिन्तन -व्यर्थ में जाने के कौन-कौन से कारण हैं? व्यर्थ में जाने से क्या-क्या नुकसान है? व्यर्थ से मुक्त समर्थ स्थिति कैसे बनायें? समर्थ स्थिति वाली आत्माओं की क्या-क्या निशानियां होगी? साधकों के प्रति -तुम एक समर्थ आत्मा हो, तुम्हारे साथ सर्व समर्थ स्वयं भगवान है तुम्हारे लिए कुछ भी असम्भव नहीं, तुम हो चाहो सो कर सकते हो, सिर्फ अपनी शक्तियों को पहचानो और उसे कार्य में लगाओ। केवल दूसरे को ही नहीं देखते रह जाओ..स्व को देखो..स्व का चिन्तन करो तो समर्थ आत्मा बन जाएंगे।

करहल। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. निधि।

गारियाधार। शिलान्यास समारोह में पधारे हुए विधायक केशुभाई नाकराणी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. तृप्ति एवं ब्र.कु. सरला।

गोधरा। आध्यात्मिक सम्मेलन में पी.बी. बारीआ (वाईस डिस्ट्रिक्ट गवर्नर), भ्रदेश पंडया (लायन्स क्लब इंटरनेशनल), पुमख लायन्स क्लब, ब्र.कु. सुरेखा एवं ब्र.कु. रतन मंचासीन हैं।

आईजल-मिजोरम। विनय कुमार त्रिपाठी, सी.आर.पी.एफ. को ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु. नर्मदा एवं ब्र.कु. दीपा।

झींझक-कानपुर। शिव ध्वजारोहण के बाद एस.डी.एम. प्रदीप दुबे, नगरपंचायत अध्यक्ष राजकुमार सिंह जी को ईश्वरीय साहित्य प्रदान करती हुई ब्र.कु. गिरजा।

कर्मयोग ..

अनुभव होगा। वातावरण के प्रभाव से मुक्त रहने के लिए स्वयं को ईश्वरीय नशें में स्थित रखें । कलियुग का वातावरण भी शक्तिशाली है, उससे अप्रभावित रहने के लिए हमें भी ऊंचे नशे में रहना पड़े। परन्तु, इससे भी पहले, मनुष्य के ऊपर उसके अपने ही विचारों का प्रभाव पड़ता है । एक तो कर्म-योगी को अन्तर्मुखता की गुफा में ही रहना चाहिए, बाह्यमुखता तो योगी की शत्रु है । दूसरे हमें उस बात की पकड़ हो कि मेरा मन का कौन सा सूक्ष्म संकल्प मुझे कब बहा ले गया । कोई भी मनुष्य कार्यों में इतना व्यस्त नहीं रहता, जितना वह व्यर्थ के विचारों में व्यस्त रहता है । और उस प्रकार ज्ञान बल का बाँध बांधकर मन के प्रवाह को रोक देना चाहिए ।

यह सिद्धांत कभी नहीं भूलना कि यदि कर्म आसक्त होकर कामनावश या दिखावे के लिए किये जा रहे हैं तो कर्म में आत्मा की शक्ति प्रयोग होती है। परन्तु कर्म यदि अनासक्त होकर अर्पण भाव से किये जा रहे हैं तो ऐसे कर्म आत्मा को शक्ति प्रदान करते हैं। अच्छे कर्म भी यदि अनासक्त होकर न किए जाएँ तो वे भी आत्मा को शक्तिशाली नहीं बनायेंगे, उनका केवल गायन ही होगा । इसलिए कर्मातीत होने के लिए अनासक्त भाव से कर्म करना आवश्यक है । नहीं तो अच्छे कर्म भी बन्धन बन जाएंगे ।

कोई भी व्यक्ति कर्मयोगी तब तक नहीं बन सकता, जब तक कि वह अमृतवेले योग-रस ग्रहण न करे व ईश्वरीय महावाक्यों का रस न पिये । ये दोनों बातें ही मन को एकाग्र, आनन्दित व शक्तिशाली बनाती हैं । सहज कर्मयोगी जीवन के अनुभव के लिए लौकिक कार्य पर जाने से पूर्व दस या या पंद्रह मिनट योगाभ्यास करके जाएँ व वापिस घर आने पर भी इतना ही समय स्वयं को योग अभ्यास द्वारा फ्रैश करें। जो बहनें या भाई भोजन बनाते हैं, वे भोजन बनाने के समय को तपस्या काल मान लें । दो से चार घण्टे तक प्रतिदिन तपस्या के लिए आपके पास हैं । उसमें महान सेवा भी समाई है व तपस्या भी । बस ज्यों ही आप भोजन बनाना शुरू करें, मन को चारों ओर से समेट लें । भाव-विभोर करनेवाला ईश्वरीय गीत बजा लें, ताकि मन ईश्वरीय प्रेम में लीन होने लगे । अति खुशी व आनंदित स्थिति में स्थित होकर योगयुक्त होकर भोजन बनायें । इस प्रकार अनुभव करें कि सर्वशक्तिवान बाप मुझे शक्तियों से भर रहा है, उसकी शक्तिशाली किरणें मुझ आत्मा में समा रही हैं ।

यदि आपको कार्यालय में बुद्धि का काम करना पड़ता है तो कार्य प्रारंभ करते हुए, अन्त में व एक बार मध्य में योग अभ्यास करें । 'बाप' मेरे साथ है, मुझे निहार रहे हैं यह स्मृति रखें । यदि आप विद्यार्थी है तो स्कूल में जब घण्टा बदलता है, उसके बीच में कुछ मिनट योग करें । जब होमवर्क शुरू करें तब योग करें व स्कूल जाने से पूर्व व आने पर कुछ समय योग अभ्यास करें । इस प्रकार जिन्हें तपस्या करने का लक्ष्य है वे तो मार्ग निकाल ही लेंगे। परन्तु जो संसार में ज्यादा ही उलझ चुकें हैं, वे तो बहाना देते ही रहेंगे व स्वयं के भाग्य को गंवाते रहेंगे । सबसे शक्तिशाली तपस्या तो यह है कि हाथ काम करें और बुद्धि सर्वशक्तिवान से शक्ति व शान्ति प्राप्त करें । यह अनुभव रहें कि मैं आत्मा कर्म करा रही हूँ और चारों ओर शान्ति, शक्ति व पवित्रता के वाइब्रेशन्स फैला रही हूँ । यह एक साथ डबल सेवा का स्वरूप हैं । तो आओ, भिन्न-भिन्न विधियां अपनाकर इस वर्ष कर्मयोग की तपस्या करें । संसार हमें तब ही देख सकेगा जब हम ऊंची स्टेज पर स्थित होकर कर्म करेंगे । उसके लिए स्वयं दूसरों से व साथियों से स्नेह बढ़ायें, अपनी भावनाओं को ठीक करें । दूसरों से घृणा करनेवाला कभी भी कर्म-योगी नहीं बन सकता । यज्ञ से व यज्ञ-सेवा से प्रेम बढ़ायें । अपने विचारों को और अधिक सशक्त बनायें। संसार समाचारों को भी साक्षी भाव से ही सुनें। उनके चिन्तन व वर्णन में ही दिन न बीतते जाएँ। तब ही हमारी तपस्या सफल होगी और हम प्रत्यक्षता के द्वार खोल सकेंगे ।